PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - नौंवा | अंक-तीसरा | जुलाई-2011 | मासिक पत्रिका

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
9950 55 66 71(राज.)
9871 50 1999 (दिल्ली)

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 9928 92 53 04

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी
ज्योति सरदाना
परमजीत सिंह

मुख्य प्रष्ठ सज्जा
प्रथम सरधारा

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक – मुद्रक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से मुद्रित व 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर– 335001 (राजस्थान) से प्रकाशित

मेरे सतगुरु दीन दयाल 4
एक शब्द

भाणा 5
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

केवल सतगुरु ही जानते हैं 35
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

भजन-अभ्यास 46
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के अनमोल वचन
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

धन्य अजायब 50
अहमदाबाद में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in
Website : www.ajaibbani.org

(112)

सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर
जिला–श्री गंगानगर (राज.)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मेरे सतगुरु दीन दयाल

मेरे सतगुरु दीन दयाल दया कर, मुझको आन संभालो जी, (2)

1. मैं पापी घोर दुराचारी, कदमों में मुझे बैठा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

2. दुनियां के पाप सदा घेरें, सतगुरु जी मुझे बचा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

3. पाँचों दुश्मन सदा हैं पीछे, सतगुरु जी मुझे छुड़ा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

4. मन का वेग चले रथ सा, सतगुरु जी आन रुका लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

5. भवसागर में फँसा हुआ हूँ, सतगुरु जी पार लगा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

6. चरनों में तुम्हारे नेह रहे, दुनियां से मुझे निकालो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

7. मैं भूला भटका राही हूँ , मुझे करके दया बुला लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

8. कहे 'अजायब' भजन कर बंदे, अपने पर दया करा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भाणा

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में साँस–साँस के साथ नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर अपार दया करके हमें यश करने का मौका दिया है। अभी प्रेमियों ने यह भजन बोला है:

सावन दयालु ने रिमझिम लाई तू मौसम रंगीले च आ के तां देख।
मैं भर भर नैणा दे जाम पिला दूं तूं इक वारी नजरां मिला के तां देख।

इस भजन का मतलब उस समय समझ आता है जब हम अपनी आत्मा से स्थूल पर्दा उतारकर अंदर नूरी स्वरूप के दर्शन कर लेते हैं। जब यह भजन लिखा गया उस समय पप्पू को इस भजन की ट्रांसलेशन करने में बहुत दिक्कत आई। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

इक भौरी दर्शन दीजै।

हर महात्मा ने उस स्वरूप की महिमा की है कि वे भंवरे की तरह आशिक हो गए, उस स्वरूप को छोड़ न सके और उस थोड़े से दर्शनों के लिए तड़पते रहे। प्यारेयो! हम यहाँ गोरे–काले शरीरों पर नज़र रखते हैं अगर हम भी गुरु के बताए गए सिमरन द्वारा नौं द्वारे खाली करके अंदर उसके असली स्वरूप को प्रकट कर लें तो उस स्वरूप को छोड़ नहीं सकते।

इसी तरह जब बुल्लेशाह की मुखालिफत हुई उनसे पूछा गया कि सारी दुनियां मक्का की तरफ जा रही है लेकिन तुम ऊँची जाति के सैय्यद होकर एक अरांई के पास क्यों जाते हो, उसमें ऐसी क्या

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

खासियत है? बुल्लेशाह ने कहा, ''अगर आप बाहर से देखें तो उनके तन पर फटे–पुराने कपड़े ही हैं अगर अंदर देखेंगे तो आप बहिश्तों में भी नहीं थूकेंगे। बहिश्तों की खातिर दुनियां बर्फ में गल जाती है कि पता नहीं बहिश्त कितनी बड़ी चीज़ है?'' कबीर साहब कहते हैं:

कवनु नरकु किआ सुरगु विचारा सन्तन दोऊ रादे।
हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे।

हमारे ऊपर गुरु की दया है। हमें न स्वर्गों की चाहत है न नर्कों का डर है। चाहे यह दुनियावी प्यार था, लैला को उसकी सखिओं ने ताना मारा कि तू एक बादशाह की लड़की होकर उस काले, सूखे फकीर के पीछे लगी है जिसका शरीर हड्डिओं का ढ़ेर है। लैला ने हंसकर उन सखिओं से कहा, ''तुम्हारे पास वह आँख ही नहीं है अगर तुम मेरी आँखों से मजनूं को देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि वह हड्डियों का ढेर है या मेरे दिल का श्रृंगार है?''

प्यारेयो! यही हालत गुरु व शिष्य की है बेशक ईश्क देह से शुरू होता है। जब गुरु की मनमोहनी मूरत एक बार आँखों के सामने आ जाती है, हम अंदर जाकर गुरु के नूरी स्वरूप के दर्शन करते हैं तो पता चलता है कि बाहर तो सिर्फ पर्दा है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

सज्जण मुख अनूप अट्ठे पहर निहालसां।
फिरदा कित्थे हाल जे डिट्ठा तां मन धरापया।

आप कहते हैं, ''मेरे प्यारे गुरुदेव का स्वरूप बहुत सुंदर है। मेरा दिल करता है कि वह आठों पहर मेरे सामने बैठे रहें और मैं उनको देखता रहूँ। जब रामदास जी नज़र नहीं आते तो मेरी हालत पागलों जैसी हो जाती है। जब मैं उनको देख लेता हूँ तो मुझे चैन आ जाता है।'' इस शब्द में यही सब कुछ ब्यान किया गया है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्यारेयो! जब हम उस अमृत बरसाने वाले स्वरूप का दर्शन कर लेते हैं तब हमें इसकी समझ आती है। जो भी अंदर गए वे बिना दाम उसके गुलाम हो गए उनकी आँखों में मनमोहनी मूरत इस तरह समा गई वे जोर लगाकर भी अपने आपको अंदर से नहीं निकाल सके।

हमें पता है कि इंसान पर ऐसा वक्त आता है जिसे हम टाल नहीं सकते लेकिन उसे मानने के लिए कोई तैयार नहीं है। जब गुरु नानकदेव जी स्यालकोट (पाकिस्तान) गए तो वहाँ के लोगों ने कहा कि यहाँ तो सब लोग नास्तिक है। गुरु नानकदेव जी ने कहा कि यहाँ बड़े अच्छे समझदार व जौहरी भी है। आपने मरदाना को एक कागज का टुकड़ा देकर मूला खत्री से सच व झूठ का सौदा लेकर आने के लिए कहा। मरदाना ने मूला खत्री के पास जाकर कहा, ''मैं तुम्हारे पास सच और झूठ का सौदा लेने के लिए आया हूँ?'' मूला ने उसी कागज पर लिख दिया कि मरना सच है जीना झूठ है लेकिन हम मरने को सच नहीं मानते और जीने को सच मानते हैं।

जब गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु ग्रन्थ साहब का संग्रह किया उस समय गुरुओं की पोथिओं को पोथी साहब कहा जाता था। जहाँ–जहाँ भी पुरातन गुरुओं या भक्तों की बानी थी गुरु अर्जुनदेव जी ने उसे इकट्ठा करने में काफी मेहनत की।

गोईंदवाल में गुरु अमरदेव जी महाराज हुए हैं। गुरु अमरदेव जी की बानी उनके पुत्र मोहन जी के पास थी। जब गुरु अर्जुनदेव जी गोईंदवाल बानी लेने गए तो उस वक्त गुरु अमरदेव जी के दूसरे बेटे मोहरी जी ने आपसे विनती की कि आप घर चलें। गोईंदवाल गुरु अर्जुनदेव जी का ननिहाल था। आप मोहरी के साथ उनके घर गए। मोहरी जी की घरवाली ने बहुत रूदन किया कि जब से गुरु रामदास

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जी व बीबी भानी जी गए है आपने हमें बिल्कुल भुला दिया है। आपने न कभी हमारे पास कोई संदेश भेजा और न ही दर्शन दिए हैं इसलिए दिल बहुत तड़पता है। मोहरी जी का बड़ा लड़का आनन्द साहब था। गुरु ग्रन्थ साहब में आप आनन्द साहब की बानी पढ़ते हैं। आनन्द साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

अनंदु भइआ मेरी माए सतगुरु मैं पाइआ।

आनन्द का प्यारा लड़का भाई सुंदर था। जब गुरु अमरदेव जी ने चोला छोड़ा उस समय अर्जुनदेव जी बहुत छोटे थे और भाई सुंदर आपसे दस साल बड़ा था। अर्जुनदेव को कुछ–कुछ याद था लेकिन आप चाहते थे कि अमरदेव जी ने आखिरी समय में जो कहा था वह भल्लों के मुँह से सुना जाए क्योंकि गुरु गद्दी भल्लों के घर से सोढ़ी वंश में गई थी। अर्जुनदेव जी ने भाई सुंदर से कहा कि उस समय गुरु अमरदेव जी ने क्या वचन कहे थे और उस वार्ता का रस कैसा था?

भाई सुंदर ने सारी वार्ता बड़े प्यार से बताई। गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु ग्रन्थ साहब में जिस तरह वारां, पउड़ियां, श्लोक लिखे हैं उसी तरह इस बानी का नाम सद है। सद भी छन्द की एक चाल होती है। अंत समय में सिक्ख लोग इस सद को उचारते हैं। हिन्दू गरूड़ पुराण का पाठ करते हैं। मुसलमान कुरान का पाठ करते हैं।

हम यह नहीं विचारते कि हम इस ग्रंथ को पढ़कर या सुनकर मुक्त हो जाएंगे। किसी भी ग्रन्थ को पढ़ने का भाव यह है कि हम उसके कहे अनुसार चलें, परमात्मा का **भाणा** मानें। यह संसार एक चलती सराय है। हम बिछुड़ने वाली आत्मा को अंत समय में परेशान न करें और घर का वातावरण न बिगाड़ें। इस बानी में यही संवाद है बड़ा गौर से सुनने वाला है:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''जिस परमात्मा ने यह संसार पैदा किया है वही परमात्मा सबका दाता है। जो परमात्मा की भक्ति करता है परमात्मा उसकी रक्षा करता है, कामना की पूर्ति करता है। भक्त तो परमात्मा से मिलाप की ही कामना करता है।''

खंड पाताल दीप सभ लोआ सभि काले वसि आपि प्रभि कीआ।
तृहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा।

परमात्मा ने खंड, ब्रह्मांड की रचना करके इसका इंतजाम काल के हवाले कर दिया है। परमात्मा यहाँ का भी मालिक है और आगे का भी मालिक है। जिस तरह माता को पुत्र प्यारे होते हैं उसी तरह परमात्मा को अपने भक्त प्यारे होते हैं।

गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोई जीउ।।

सन्तों की बानी इस तरह लिखी गई है कि एक तुक में सवाल होता है और दूसरी तुक में आप जवाब देते हैं अगर हम पहली तुक का सही अर्थ न करें तो आगे चल ही नहीं सकते।

शिष्यों ने विनती की महाराज जी! परमात्मा में इतने गुण हैं कि वह सबका दाता है सबका बादशाह है, भक्तों की रक्षा करता है और सबको रोजी–रोटी देता है। क्या हम पढ़–पढ़ाई करके, बेटे–बेटियां छोड़कर, घर–बार छोड़कर, कौम बदलकर या हुकूमत के जोर से उस परमात्मा को प्राप्त कर सकते है?

गुरु साहब कहते हैं, ''प्यारेयो! कोई पूर्ण महात्मा मिले! वह हमें 'शब्द–नाम' का भेद दे। हम हर तरफ से अपना ख्याल निकालकर 'शब्द–नाम' की कमाई करें तो परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आपको पता है हम सभी इस मंडल पर रहने वाले हैं। जब लड़की शादी करके ससुराल चली जाती है तो उसके ससुराल वालों की मर्जी है वे उसे किस नाम से पुकारें; लड़की उसी नाम को पसंद कर लेती है। अगर हम लड़की से कहें कि बेटी! अब तू बहन–भाईयों व माता–पिता के प्यार को छोड़ दे क्योंकि तू बड़ी हो गई है तेरी शादी करनी है। जब लड़की की शादी हो जाती है तो उसे कुछ कहने की जरूरत नहीं, जब वह अपने प्यारे पति से मिलती है तो बहन–भाईयों व गुड्डी–पटोलों का प्यार अपने आप ही उसके दिल से निकल जाता है। आप देखें! एक आदमी के मिलाप ने बाकी सबके प्यार को मद्धम कर दिया।

आजकल न कोई जलधारे करता है न धूणियां तपाता है और न ही नंगे पैर तीर्थों पर जाता है। मैंने अपनी ज़िंदगी में इस तरह के बहुत से कर्मकांड किए हैं। मैं जब बाबा बिशनदास के चरणों में गया तो उन्होंने मुझे 'दो–शब्द' का भेद दिया तो पहले के कर्म अपने आप ही फीके लगने लगे।

मेरे पास बहुत से पुजारी, पादरी और ग्रन्थी 'नाम' लेने के लिए आते हैं। वे पूछते हैं कि हम जो नित्यनियम करते हैं क्या वह छोड़ दें? मैं उनसे कहता हूँ, ''आपको हम जो युक्ति बताते हैं आप वह भी करें।'' मुझे पता है कि जो यह युक्ति करता है उसे दूसरी चीज़ें अपने आप फीकी लगने लग जाती हैं।

नाम तुल कुछ अवर न होए।

आप प्यार से कहते हैं कि जो रस व मिठास नाम में है वह और कहीं नहीं। जिसने एक बार गिरी खा ली वह छिलका क्यों खाएगा? जो गुरु का दिया हुआ शब्द सुनता है वह बाकी सब कुछ ठप कर रख देता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब जीव सरन गुरु की आवे। कर्म धर्म और भर्म नसावे।
जो गुरु मार्ग देहि लखाई। सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं प्यारेयो! गुरु जो मार्ग बताता है वही कर्म है वही धर्म है। जो सब तरफ से ख्याल हटाकर गुरु के बताए शब्द की कमाई करता है वह परमात्मा को पा लेता है।

अवरो न जाणहि सबदि गुरु के, एकु नामु धिआवहे ।।

नाम की कमाई जप–तप, पूजा–पाठ सब कुछ ही है; नाम के समान और कुछ भी नहीं। नाम को छोड़कर हम किसी भी रास्ते पर चलेंगे तो हमें अंत समय पछताना पड़ेगा। गुरु नानक साहब कहते हैं:

नाम विसार चले अन मार्ग अंतकाल पछताई हे।

परसादि नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ।।

गुरु नानक जी से पहले कबीर साहब इस संसार में आए। कबीर साहब कहते हैं कि मैं चारों युगों में आया। सतयुग में मेरा नाम सतसुक्रत, त्रेता में करूणामय द्वापर में मनिन्दर और कलयुग में कबीर पड़ा। इसी तरह गुरु नानकदेव कुलमालिक इस संसार में आए तो उन्होंने गुरु अंगद पर कृपा की और गुरु अंगददेव ने गुरु अमरदेव पर कृपा की।

आप नारायण कला धार जग में प्रवरेओ।

गुरु अमरदेव को किसी बाहरी रीति–रिवाज से परमात्मा नहीं मिला था। उनके गुरुओं की कृपा (प्रसाद) से ही उन्हें परमगति प्राप्त हुई और वह परम सन्त बने। एक दीपक जलता है तो वह दूसरे दीपक को जला देता है, प्रकाश वही होता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

ज्यों जल में जल आए खटाना।
त्यों ज्योति संग मिल ज्योत समाना।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नदी आकर समुद्र में मिल जाती है तो नदी या समुद्र के पानी को पहचाना नहीं जा सकता। इसी तरह गुरु नानकदेव जी से मिलकर अंगददेव गुरु नानक ही बन गए।

राम कृष्ण ते को बड़ो तिनहूँ भी गुर कीन।
तीन लोक के नायका गुरु आगे आधीन।

आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ।।

कचहरी में आवाज़ लगाने वाले को हकारा कहते है। जब उसे हुक्म दिया जाता है तो वह ऊँची आवाज़ देता है। उसी तरह परमात्मा की तरफ से आवाज़ देने वाला धर्मराज है; जिन्हें जाना होता है धर्मराज उनके पास आता है।

गुरु अमरदेव जी महाराज अपने प्यारों से कहते हैं, ''हमें धुर दरगाह से परवाना आ गया है। यह भक्ति करने का, परमात्मा को याद करने का समय है।'' कमाई वाले साधु पहले से ही तैयार होते हैं; जो रोज मरता है उसे मौत का क्या डर? हम मौत का नाम सुनकर कहते हैं कि हमारे सामने मौत की बात मत करो अगर हमने जीते जी मरकर देख लिया हो तो फिर डर नहीं खुशी होगी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कमाई वालों को मौत के समय अपनी शादी से ज्यादा खुशी होती है क्योंकि तकलीफ शरीर को होती है आत्मा को कोई तकलीफ नहीं होती।''

जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ।।

आप कहते हैं, ''परमात्मा अटल है, सदा है, अतुल्य है उसे तोला नहीं जा सकता वह बेअंत है; हमें परमात्मा का बुलावा आ गया है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अगर आप सोचें कि परमात्मा को पढ़–पढ़ाई से पाया जा सकता है तो यह आपकी भूल है अगर परमात्मा पढ़–पढ़ाई से मिलता तो रावण को मिल जाता। रावण चार वेदों का टीकाकार पंडित, पढ़ा–लिखा विद्वान था; वह पराई औरतों की तरफ न देखता। उत्तरी भारत में लोग हर साल रावण का पुतला जलाते हैं। हम परमात्मा को भक्ति करके ही प्राप्त कर सकते हैं।

हरि भाणा गुरु भाइया गुर जावै हरि प्रभ पासि जीउ।।

हम उस समय कहते हैं कि किसी डॉक्टर को बुलाओ, कभी बच्चों के साथ लड़ते हैं कि तुम अच्छा डॉक्टर क्यों नहीं बुलाते लेकिन कमाई करने वाले को परमात्मा का **भाणा** अच्छा लगता है; वह परमात्मा के बुलावे को सिरमौर मानता है और परमात्मा के पास जाता है।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''जो सुख हुक्म मानने में है वह सुख हुक्म चलाने में नहीं।'' वही हुक्म मानेगा जिसका परमात्मा गुरु के साथ प्यार है। हम उस समय लम्बी–चौड़ी अरदासें करते हैं।

मैं अपनी ज़िंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि मेरा एक दोस्त भाई केहर सिंह था। उसके परिवार के लोग यहाँ बैठे हैं शायद इन्हें याद हो! केहर सिंह के अंत समय में ये लोग कहने लगे कि आप इसे गीता का अध्याय सुनाएं। मैंने कहा, ''इसको तो सुनाई नहीं देता गीता का अध्याय पढ़ने का क्या फायदा?'' ये लोग कहने लगे कि इसका लड़का अध्याय सुनेगा। मैंने गीता का अध्याय पढ़ना शुरू किया, केहर सिंह का लड़का लोटे में पानी रखकर अध्याय सुनने लगा। अध्याय सुनने के बाद उसने वह पानी केहर सिंह के मुँह में डाला। मैंने हँसकर कहा, ''यह सारा अज्ञान है। तेरा सुना अध्याय उसके पेट में कैसे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जाएगा? जब तुम्हें शान्ति नहीं मिली तो उसे शान्ति कैसे मिलेगी? गीता के अध्याय तो हमने पहले पढ़कर इन पर अमल करना था कि इनमें क्या लिखा है? गीता में किसी जगह यह नहीं लिखा कि आपको मौत नहीं आएगी या आप **भाणां** न मानें। मौत अटल है यह टलेगी नहीं।''

सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ।।

सन्तों में इतनी नम्रता होती है कि वे कुलमालिक होकर भी परमात्मा के आगे विनती करते हैं कि हे परमात्मा! मेरी पैज रखें, रक्षा करें, मैं आपके द्वारे पर भीख माँगने आया हूँ मेरी इज्ज़त आपके हाथ में है। हम भूले–भटके जीवों को 'नाम' मिला है, हम भी उस समय गुरु परमात्मा के आगे अरदास करें।

पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो।।

मेरी पैज कैसे रहेगी? मैं आपसे माँगता हूँ कि आप अपना पवित्र 'नाम' जो माया–मैल रहित और पापों का नाश करने वाला है जिसके पास यम नहीं आता वह 'नाम' मेरे अंदर प्रकट कर दें।

अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो।।

नाम के बिना हमारा कोई संगी–साथी नहीं। इस दुनियां से सिर्फ नाम ही हमारे साथ जाएगा, नाम वाले के पास यम नहीं आता।

आप जानते हैं कि बादशाह जिसे अपना प्रमाण पत्र दे दे तो कर्मचारियों को वह प्रमाण पत्र दिखाने की ही जरूरत होती है। जब वह व्यक्ति कई बार जाता है तो कर्मचारी उसे पहचान लेते हैं फिर वह प्रमाण पत्र भी नहीं पूछते। इसी तरह गुरु, सेवक को 'नाम' का परवाना देता है। सेवक रोजाना नीचे के मंडलों, धर्मराज के मंडल को पार करता है। गुरु साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धर्मराय है हर का किया हर जन सेवक नेड़ ना आवै।

धर्मराज भी परमात्मा का बनाया हुआ है। धर्मराज के दूतों को हुक्म है कि गुरु भक्ति करने वालों के पास नहीं जाना अगर तुम 'नाम' वाले के पास गए तो न तुम छूटोगे न मैं छूटूंगा।

ण हूँ ण तूं ण छूटै निकट ण जायो दूत।

सतिगुरु की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ।।

यह गुरु अमरदेव जी के अंत समय का हाल है। जब सतगुरु ने परमात्मा के आगे अरदास की तो परमात्मा ने सब तरफ से ख्याल हटाकर उनकी अरदास को कबूल किया। परमात्मा जानता है; बिना बोले अरदास सुनता है कि यह किस चीज़ के लिए तड़फ रहा है? अगर हम भी परमात्मा के आगे अरदास करते हैं तो उससे भी रहा नहीं जाता वह अपने सेवक की अरदास जरूर सुनता है। जब अंत समय आता है माता–पिता, बहन–भाई, बिरादरी, हुकूमत कोई भी मदद नहीं करता।

हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ, धनु धनु कहै साबासि जीउ।।

वहाँ पहुँची सभी आत्माओं ने गुरु अमरदेव को शाबाश दी कि परमात्मा ने आपको अपने मंडल में जगह दी है।

मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो, मेरे हरि भाणा आउ मैं पासि जीउ।।

गुरु अमरदेव जी के चार भाई थे। आप सबसे छोटे थे आपने अपने सारे परिवार, शिष्यों, पुत्र मोहन–मोहरी को अपने पास बिठाकर कहा, ''परमात्मा का हुक्म आया है वह मुझे अपने पास बुला रहा है।''

हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभ करे साबासि जीउ।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''मैं जाने के लिए तैयार हूँ परमात्मा मुझे शाबाश दे रहा है। मैंने उसका **भाणा** मान लिया है।'' जब जीव

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परमात्मा का दिया हुआ जीवन भोगकर खुशी से जाने के लिए तैयार हो जाता है तो परमात्मा भी खुश होता है कि जब मैंने इसे बुलाया यह खुशी से आने के लिए तैयार हो गया। जिस तरह मेरे गुरु कृपाल जब मुझे गुफा में लेने गए तो आपने यही कहा, ''भाई! एक तो पास हुआ।

भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''जिसे **भाणा** मानना आ जाता है वही सिक्ख है महात्मा है गुरु है; जो भाणा नहीं मानता वह कुछ भी नहीं है।''

परमात्मा सावन के अंत समय में महाराज कृपाल रोज अरदास किया करते थे कि आप कुछ समय और संसार में रहें आपका साया हमारे सिर पर बना रहे। एक दिन दयालु सावन ने आपको अपनी चारपाई के पास बिठा लिया व आँखें बंद करने के लिए कहा। जब कृपाल सिंह जी ने आँखें बंद की महाराज सावन आपको सन्त मंडल में ले गए। वहाँ सभी सन्त इस बात पर सहमत थे कि सावन सिंह जी को कुछ अरसा और संसार में रहने दिया जाए लेकिन बाबा जयमल सिंह जी नहीं माने। सावन सिंह जी ने आँखे खुलवाकर कृपाल सिंह जी से पूछा, ''क्यों भाई! तुमने सब कुछ देख लिया सुन लिया?'' कृपाल सिंह जी ने कहा कि उस समय मैंने महाराज सावन के आगे अपना सिर झुका दिया। महाराज सावन ने अपनी प्यार भरी दृष्टि मेरी आँखों में डाली तो मेरी आँखे बंद हो गई जो रस मुझे उस समय मिला वह महाराज सावन के चरणों में सारी जिंदगी में प्राप्त नहीं हुआ था। जब संगत महाराज सावन को अपना आप ठीक करने की विनती करती तो आप कहते, ''ऐसा करने से मेरी गुरमुखता में फर्क आता है। आप चाहे बाबा जयमल सिंह जी के आगे अरदासें करते रहें।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

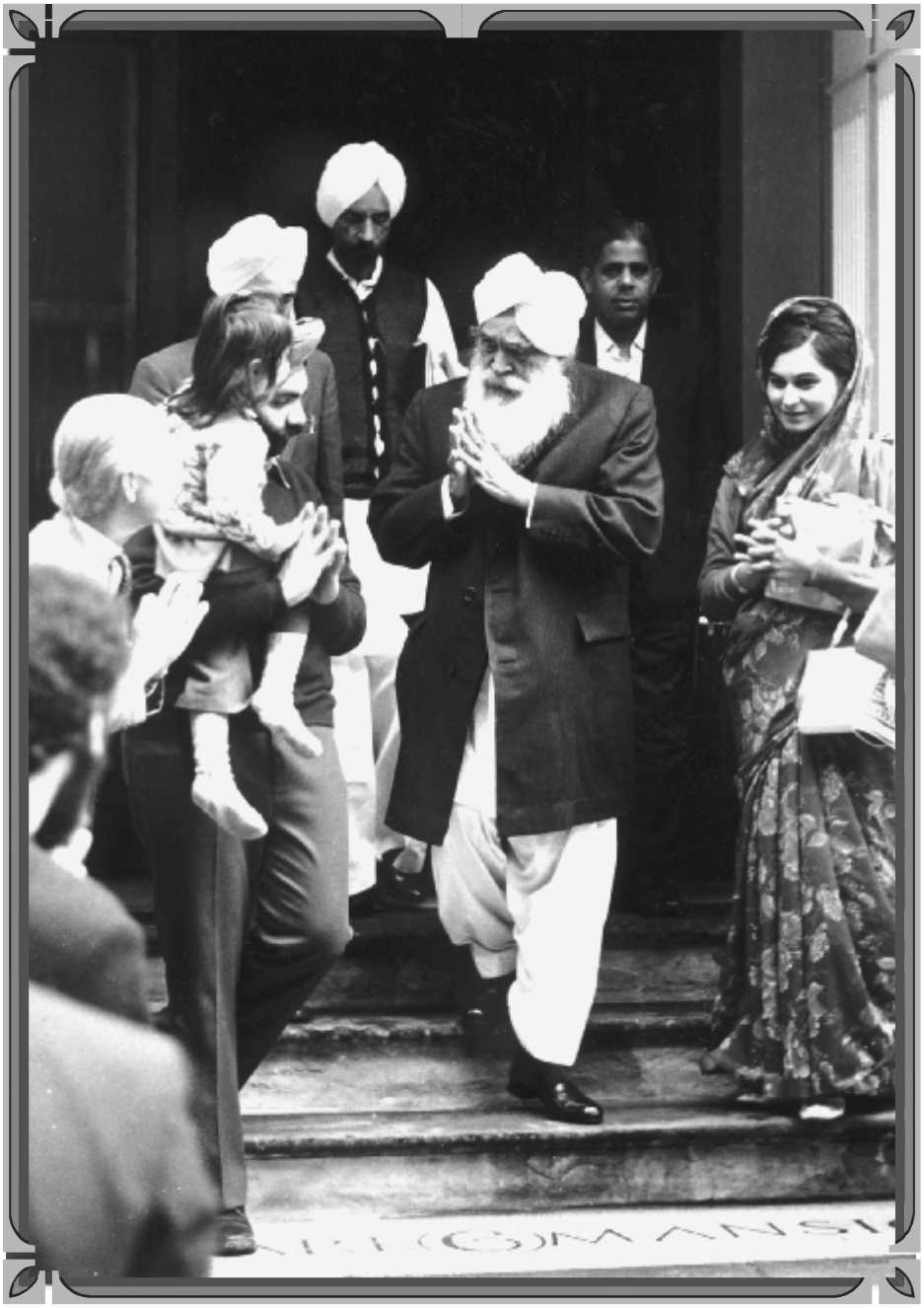

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मियाँ–बीवी का रिश्ता कितना अच्छा होता है? बीवी ने मियाँ की और मियाँ ने बीवी की बहुत सेवा की होती है लेकिन अंत समय में हम उसे शान्ति से शरीर भी नहीं छोड़ने देते। बीवी अपनी जरूरतें मियाँ के आगे रख देती है कि मुझे किसके आसरे छोड़कर जा रहे हो? यही हालत मियाँ की है। ये सिर्फ उनकी हालत है जो कमाई नहीं करते।

मैंने पश्चिम में और यहाँ भी ऐसे प्रेमी देखे हैं कि जब अंत समय आता है तो वे सिमरन करते हैं। मैंने एक ऐसा भी प्रेमी देखा है जिसने अपनी पत्नी का हाथ पकड़कर प्रन्दह–बीस मिनट सिमरन किया और अपनी पत्नी से कहा, ''तुमने साठ साल मेरी सेवा की है, मैं खुश होकर तुम्हें गुरु के साथ जाने की इज़ाज़त देता हूँ।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई का बीज नाश नहीं होता। संगत में कमाई करने वाले काफी प्रेमी होते हैं जो गुरु के भाणें को परमात्मा का **भाणा** मानते हैं।'' गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

राम गओ रावण गओ जांको बहु परिवार।
कहो नानक थिर कछु नहीं सुपने ज्यों संसार।

अगर हम भाणा नहीं मानते तो क्या जाने वाले को रख लेंगे? ऐसा करने से मरीज को बहुत तकलीफ होती है। फरीद साहब कहते हैं:

आवत किन्हें न राख्या जावत क्यों रखया जाइ।
जिंद निमाणी कढीऐ हड्डा कू कड़काइ।
आपण हथी जोलि कै गल लगै धाइ।

अच्छा तो यही है कि जाने वाले को इज़ाज़त दें कि तू इस संसार से खुशी से विदा ले।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''जो **भाणा** मानते हैं उन्हें अंदर से रस और बल मिलता है; उनके अंदर अनहद शब्द प्रकट हो जाता है जिसकी कोई सीमा नहीं। जब गुरु लेने आता है तो ऐसी आत्मा को खींचकर गले से लगा लेता है।''

नानक कचड़िया सिउ तोड़, ढूंढ सजण सन्त पकिआ।
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइया न जाहि छोड़।

अगर जंगल में किसी को डाकुओं ने घेरा हो कोई बचाने वाला साथी पास न हो उस समय हमें बचाने वाला कोई सज्जन मिल जाए तो कितनी खुशी होगी! यही हालत हमारी आत्मा की है हम जिस परिवार या कबीले में रहते हैं इनमें से वहाँ कोई साथ नहीं जाता। ऐसे समय में जब हमारा प्यारा सतगुरु अंदर प्रकट हो जाता है तो आत्मा की खुशी के बारे में मैं क्या बताऊँ? कबीर साहब कहते हैं:

यम का ठेंगा बुरा है ओ नहीं सहेया जाए।
एक जो साधु मोहे मिलआ तिन्हीं लिआ बचाए।

यम का डंडा बड़ा सख्त है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनि काँप गए लेकिन मुझे मेरे साधु गुरु ने बचा लिया।

कबीर धाणी पीड़दे सतगुरु लए छुड़ाए।
परा पूर्वली भावनी ते प्रकट होए आए।

महात्मा के चरणों में जाना, 'नाम' ले लेना क्या हमारे अपने वश में है? कबीर साहब कहते हैं, ''जब परमात्मा हमें पिछले बहुत सारे कर्मों का ईनाम देता है तभी हम इस तरफ जाते हैं।''

तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''आप मेरे भाई, पुत्र व शिष्य बैठे हो आप बताओ क्या मैं अपने गुरु अंगददेव जी का **भाणा** न मानूँ? वह मुझे लेने आए हैं, वह मुझे अपनी बाँहों में लेंगे, अपनी गोद में बिठाएंगे।''

धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ।।

परमात्मा का हुक्मनामा न टलता है न बदलता है। चाहे आप खुशी से चाहे रो–पीटकर जाने के लिए तैयार हो जाएं। रोने–पीटने से काल ले जाएगा अगर खुशी से चलने के लिए तैयार हो जाएंगे तो गुरु लेने के लिए आएगा। खुशी तभी होती है जब गुरुदेव आते हैं; गुरुदेव तब आते हैं जब हम उनकी भक्ति करते हैं।

महाराज सावन कहा करते थे, ''जिसे 'नाम' मिला है अगर गुरु बाहर मौज नहीं बरताता तो अंदर अंड में जाकर संभाल करता है। गुरु किसी भी हालत में अपने सेवक को काल के वश में नहीं जाने देता।''

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ।।
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मैं मूलि न भाइआ।।

गुरु अमरदेव जी ने सभी भाइयो, पुत्रों और संगत को बुलाकर कहा, ''देखो भाई! मैं अपने गुरु के पास जा रहा हूँ। मुझे खुशी है कि मैं चार दिन आप लोगों के बीच शान्ति से बिता सका; मेरे जाने के बाद मत रोना।'' कबीर साहब कहते हैं:

सन्त मुए क्या रोइये जो अपने गृह जाए।
रोवो साकत बापरे जो हाटो हाट बिकाए।

जिसने बार–बार जन्म लेना है उसके लिए रोएं। गरूड़ पुराण में भी लिखा है कि रोते समय आपके नाक से जो मैल निकलती है वह उस प्राणी को प्राप्त होती है। हम उसकी आत्मा के लिए नहीं रोते अपने धंधो

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

के लिए रोते हैं। हमें उसकी आत्मा के लिए रोना नहीं चाहिए; भजन करना चाहिए कि गुरुदेव आप इस आत्मा को अपने चरणों में जगह दें।

महाराज सावन कहा करते थे, ''अगर आपका उस आत्मा के साथ प्यार है तो उसके जाने के बाद न रोएं।'' गुरु साहब कहते हैं:

बालक मरे बालक की लीला कह-कह रोवे बाल रंगीला।
जिसकी चीज़ सोई लै जाई भूला रोवणहारा हे।

जिसने खेती बीजी है यह उसकी मर्जी है चाहे कच्ची काटे या पक्की काटे क्योंकि बीजने वाला मालिक है। काल ने कठिन साधना करके सतपुरुष से इस मंडल की आत्माएं माँगी, सतपुरुष ने उसकी भक्ति से खुश होकर उसे आत्माएं दे दी। अब यह उसकी मौज है कि जब चाहे ले जाए! यह उसकी लीला है उसने माँ के पेट में भी रक्षा की।

माया कारण पिड़ बन्न रोवै।

गुरु साहब कहते हैं, ''जो मेरे बाद रोएगा वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।'' जब बीबियां इकट्ठी होकर विलाप करती हैं यह यमों का राग है इस राग पर यम मस्त होते हैं। यह जिसकी वस्तु थी वह ले गया आप किस लिए रोते हैं? अगर वह भरी जवानी में ले जाए तो देखकर रोता है कि बड़ा तंदरूस्त था मेरा सारा काम संभालता था अब हमें कारोबार में घाटा हो जाएगा। उसकी आत्मा के लिए कौन रोता है कि उसके साथ क्या हो रहा है? उसकी आत्मा की किसी को फिक्र नहीं।

मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए।।

यह भी एक बहुत बड़ा अखाड़ा होता है। आर्मी में जो शूरवीरता से शरीर छोड़ता है अगर उसकी छाती में गोलियां लगी हों तो इसका यही तात्पर्य है कि इसने दुश्मन का सामना किया है अगर गोलियां पीठ पर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लगी हों तो उसे कोई ईनाम नहीं मिलता। मैं आर्मी में रहा हूँ जब किसी को ईनाम मिलता है तो उसके यार–दोस्त अपने मित्र को ईनाम मिलते हुए देखकर बहुत खुश होते हैं।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिस तरह बादशाह किसी को ईनाम देता है तो उसके यार–दोस्त खुश होते हैं। मेरे गुरु अंगददेव जी मुझ पर खुश हैं और मुझे ईनाम दे रहे हैं। मैं उस ईनाम को पाकर खुश हूँ। उसे जो अच्छा लगता है वह उसकी इज्जत रखता है।''

संगत ने पूछा, ''महाराज जी! आप कह रहे हैं कि बादशाह ईनाम देता है लेकिन आप तो संसार छोड़ रहे हैं मौत का सामना कर रहे हैं यह ईनाम आपको कौन दे रहा है?'' आप कहते हैं:

तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरु पैनावए।।

आप मेरे पुत्र, भाई और शिष्य विचार करके देखें कि कोई दूसरा नहीं मेरे गुरु अंगददेव जी महाराज मुझे यह ईनाम दे रहे हैं।

सतिगुरु परतखि हौंदे बहि राजु आपि टिकाइआ।।

उस समय संगत ने विनती की, ''महाराज जी! आपके बाद संगत की अगुआई कौन करेगा?'' हम भुलक्कड़ जीव ऐसे सवाल उठा लेते हैं। ओबराय साहब ने भी कई बार मुझसे ऐसे सवाल किए कि सन्त फैसला करके क्यों नहीं जाते? मैंने इन्हें बताया कि कोई मानता ही नहीं है उस समय शोर मच जाता है। इसमें कोई शक नहीं सतगुरु फैसला करके जाता है लेकिन बाद में हम जीव लालचवश होकर उनकी बात मानने के लिए तैयार नहीं होते।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ।।

गुरु अमरदेव जी ने संगत के सामने फैसला किया कि रामदास जी के चरणों में गिर जाओ यही परमात्मा का हुक्म है। गुरुदेव अपनी बरकतें लेकर रामदास जी में बैठ गए हैं।

सबसे पहले आपका लड़का मोहरी उठा। अमरदेव जी ने उससे पूछा, ''हाँ भई! क्या चाहिए?'' मोहरी ने कहा, ''महाराज जी! सिक्खी चाहिए। रामदास हमारे घर का टहलुआ है हम कैसे इसके पैर पकड़े?'' गुरु साहब ने मोहरी की गर्दन पकड़कर कहा कि अब जो चाहिए इससे ही मिलेगा। दूसरे बेटे मोहन जी नाराज होकर घर चले गए।

संगत में मुखिया लोग ईर्ष्या करने लगे क्योंकि मुखिया कमाई नहीं करते लेकिन संगत उनको मान दे देती है अगर वे थोड़ी बहुत कमाई करते है तो संगत पैर छूकर उनकी कमाई खींच लेती है; उन्हें साधु होने का अहंकार हो जाता है कि हमारे अंदर कुछ है जो संगत हमारे पैर छूती है; जो आपके आगे गिरता है वह कुछ तो खींचेगा ही।

गुरु अंगददेव के बच्चों दातू और दासू ने भी ऐसा ही किया था। एक बार गुरु अमरदेव जी सतसंग कर रहे थे तब दातू और दासू ने अमरदेव जी को टाँग मारी थी। गुरु अमरदेव जी महाराज नम्रता के पुंज थे आपने कहा, ''मेरा शरीर बूढ़ा है आपको चोट लगी होगी और आपने उनकी टाँगे दबाना शुरू कर दिया।''

इसी तरह गुरु नानकदेव जी के लड़के श्रीचंद और लखमीदास गुरु नानकदेव जी के आखिरी समय में आपसे नाराज़ होकर अपने घरों में चले गए थे। जब भाई लैहणा तड़फ लेकर गुरु नानकदेव जी के पास गए तो आपने पूछा, ''भाई! तेरा क्या नाम है?'' भाई लैहणा ने कहा,

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

''जी लैहणा।'' पंजाबी में लैहणा किसी से कुछ लेने को भी कहते हैं। गुरु नानकदेव ने कहा, ''अच्छा भाई तूने लेना है और हमने देना है।''

बाबा बिशनदास से मुझे 'दो–शब्द' का भेद मिला था। बाबा बिशनदास के गुरु बाबा अमोलकदास थे। बाबा अमोलक दास एक सौ चालीस साल इस संसार में रहे उन्होंने बहुत लम्बी आयु भोगी। बाबा अमोलक दास को श्रीचंद से नाम मिला था। मैंने बाबा अमोलक दास को देखा है; मैं उनको दूध पिलाता रहा हूँ। श्रीचंद ने गुरु नानकदेव जी से नामदान नहीं लिया था किसी अविनाशी मुनि को गुरु धारण किया था। श्रीचंद के पास 'दो–शब्द' का भेद था वहीं से उदासी मत चला। उदासी लोग श्रीचंद को शंकर का अवतार मानते हैं।

उस समय श्रीचंद ने कहा था कि भाई लैहणा तो हमारे घर का टहलुआ है। मेरे ख्याल से ओबराय साहब को भी समझ आ गई होगी कि नगाड़खाने में तूती की आवाज़ को कौन सुनता है? गुरु पर्दा रखकर नहीं जाता। जब गुरु हुक्म देता है तो कई लोग पास भी होते हैं लेकिन कोई मानने के लिए तैयार नहीं होता। बाद में हम पार्टियों में बँट जाते हैं झूठ को सच और सच को झूठ बना देते हैं।

अंते सतिगुरु बोलिआ मैं पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ।।

उसके बाद गुरु अमरदेव जी ने कहा कि मेरे जाने के बाद किसी ने रोना नहीं। आप कीर्तन करें निर्वाण पद तक पहुँचें। स्थूल, सूक्ष्म, कारण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से ऊपर पारब्रह्म में पहुँचकर हमें निर्वाण पद प्राप्त होता है। जिसे निर्वाण पद प्राप्त होता है उसे सन्यासी भी कह सकते हैं। वहाँ पहुँचकर सारी आशाएं तृष्णाएं सुन्न हो जाती है और शब्द का राज्य हो जाता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप सब लोग निर्वाण पद प्राप्त करके कमाई करें अंदर जाकर देखें और उस अखंड कीर्तन को सुनें। वह सब कीर्तनों से ऊपर है; वह न लिखने में आता है न बोलने में आता है।

केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ।।

केसो परमात्मा का नाम है। गोपाल नाम भी परमात्मा का है। कबीर साहब कहते हैं:

केसो केसो कूकिए नां सुणिए आसार।
रात-दिवस के कूकणे कभी तो सुणे पुकार।

सिख साखा बहुते कीए केसो करओ न मीत।
चाले थे हरि मिलण को वीचे अटकयो चीत।

शिष्य बनाने की होड़ लगी हुई है; मित्र बनाने की भूख है। परमात्मा को अंदर प्रकट नहीं किया। केसो गोपाल पंडित को बुलाएं कमाई करके वहाँ पहुँचें। वह हरि कथा करें जो लिखने पढ़ने में नहीं आती।

हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए।

गुरु अमरदेव जी अपनी संगत को समझा रहे हैं कि आपने मेरे जाने के बाद नाम के रंग में रंगे रहना है। यही कथा पढ़नी है, 'शब्द–नाम' की कमाई करनी है। जिस तरह पिता अपने बच्चों को समझाता है कि प्यारे बच्चों तुमने मेरे बाद जुड़े रहना है। अपनी जिम्मेवारी से काम लेना है। इसी तरह गुरु भी अपने कई शिष्यों को अंदर से और कईयों को बाहर से समझा देता है कि आपने हरि के रंग में रंगे रहना है।

हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए।

प्यारेयो! सब दुखों और पापों का नाश करने वाली धुन सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारें दे रही है। यह धुन हर खंड–

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ब्रह्मांड को ताकत दे रही है इसके आधार पर खंड–ब्रह्मांड चल रहे हैं। आपने उस 'शब्द' को सुनना है; यही रंग गुरु को भाता है। आप जपजी साहब में पढ़ते हैं:

सुणिऐ सिद्ध पीर सुरि नाथ, सुणिऐ धरति अवल आकाश।
सुणिऐ द्वीप लोअ पाताल, सुणिऐ पोहि न सकै कालु।
नानक भगतां सदा विगासु, सुणिऐ दुख पाप का नासु।

यह विवाण नहीं कि आप सारी उम्र बूढ़े को पानी न पिलाएं। चारपाई पर शरीर जुड़ जाता है। जब अंत समय आता है उस समय उसके ऊपर झंडियां लगाकर हवा करते हैं।

मेरे पिछले गांव का वाक्या है। यहाँ उस गांव की दो चार बीबीआं बैठी भी हैं जिन्होंने यह देखा है कि एक बुजुर्ग के तीन लड़के थे वह बुजुर्ग चारपाई पर पड़ा–पड़ा शरीर छोड़ गया उन्होंने उसकी चारपाई बाहर निकाल दी किसी ने उसके शरीर पर कपड़ा भी नहीं डाला। मेरा घर उनके घर के सामने था। मैंने उस समय खेस ओढ़ा हुआ था मैंने अपना खेस उस बुजुर्ग के ऊपर डाल दिया। उसके लड़को को बुलाया कि तुम्हारा पिता गुजर गया है लेकिन लड़को ने नाराजगी जताकर आने से मना कर दिया हालांकि वे अच्छी जायदाद के मालिक थे।

उस गांव में मेरा अच्छा प्यार था सभी लोग मेरी बात मानते थे। हम शंख, फुलियां व बतासे ले आए ताकि ठीक से इसका क्रियाक्रम किया जा सके। हम उस बुजुर्ग के ऊपर से पैसे फैंकते हुए शंख बजाते हुए उसे लेकर चल पड़े। किसी ने जाकर उसके लड़को से कहा कि लोग तुम्हारी निन्दा करेंगे। वे हमारे वापिस आने से पहले ही प्रसाद तैयार करके बैठ गए। अब उनका प्रसाद खाने कौन जाए! अगर हम अर्थी नहीं सजाते तो दूसरे लोग सजा लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जीवित पितृ न माने कोई मुए श्राद्ध कराई।
पितृ भी बपरे को को पाई कौआ कूकर खाई।

हम जीवित को पानी की बूँद नहीं पिलाते मरने के बाद घर लुटा देते हैं; उसके नाम पर खीर, प्रसाद व लड्डु बाँटते हैं।

जब महाराज कृपाल इस संसार से चले गए उस समय मैं उदास होकर गांव किल्लेयांवाली चला गया। वहाँ मुझे कोई नहीं जानता था। वहाँ कोई मुझे कुछ कहे तो कोई कुछ कहे। अगर वैसा बाबा हो तो किसी से खेस ले लेता! किसी को भ्रम में डाल देता! अगर कोई मुझे घर ले जाने के लिए कहता या मुझे कोई खेस या कपड़ा वगैरहा देता तो मैं मजाक कर देता क्या इससे तुम्हारी बीमारी दूर हो जाएगी? आखिर उन्होंने कहा कि यह सी.आई.डी. का अफसर है।

उस गाँव में एक बुजुर्ग की मौत हो गई तो उन लोगों ने मुझसे कहा कि आप पाठ कर दें अगर मैं पाठ न करता तो ये लोग मेरे बारे बहुत बातें करते थे। न चाहते हुए भी मैंने पाठ करने के लिए हाँ कर दी। उन लोगों ने कहा कि आप हमारे साथ पैसे तय कर लें तो मैंने कहा कि जो आपकी श्रद्धा हो दे देना। वे लोग कहने लगे नहीं जी आप पहले हमारे साथ पैसे तय कर लें तो मैंने कहा कि आप मुझे पैसे मत देना तो वे कहने लगे जी ऐसे तो पाठ लगेगा नहीं।

मैंने कहा जैसे आपकी मर्जी है कर लो और जो पैसे बढ़ जाएंगे उन पैसों का आप क्या करेंगे? वे कहने लगे वह पैसे हम स्कूल पर लगा देते हैं। मैंने उनसे कहा कि जब तक मैं यहाँ हूँ आप अपने बुजुर्ग मार लें मैं पाठ मुफ्त कर दिया करूंगा आपका स्कूल बन जाएगा।

वह बुजुर्ग अफीम भी खाता था और नसवार भी लेता था। मैं दो दिन उनके घर रहा तो उस बुजुर्ग की बहुऐं कहने लगी बाबा जी हमारा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बूढ़ा मीठा खाता था आप मीठा नहीं खाते इसलिए हमारा पाठ नहीं लगेगा, आप मीठा खाएं। मैंने कहा, ''फिर तुम कहोगे कि वह अफीम भी खाता था और नाक में नसवार भी चढ़ाता था।'' आप सोचकर देखें! क्या यह अज्ञान नहीं! सन्त हमें जो बानी में बताते हैं वह हमारी समझ में नहीं आता और न हम उसे समझने की कोशिश करते हैं।

आप कहते हैं, ''परमात्मा की कथा पढ़नी है। 'नाम' को सुनना है जो कण–कण में व्यापक है यही सच्चा बवाण है। नाम पर सवार होकर मालिक के घर जाना है। 'नाम' ही नाव है और 'नाम' ही तुला है।''

पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरिसरि पावए।।

आप प्यार से कहते हैं कि 'शब्द–नाम' की कमाई करना ही पिंड भरना है; अंदर (हरिसर) सच्चखंड पहुँचना ही मेरे फूल है। आदमी सारी उम्र जो चाहे करे और आखिरी समय में किसी से कह जाए कि भाई मेरी चार हड्डियां उठाकर किसी सरोवर में डाल आना क्या इससे मुक्ति हो जाएगी? 'शब्द–नाम' की कमाई मेरी क्रिया है।

गुरु अमरदेव जी ने बहुत तप किया दीवार में कील के साथ अपने बाल बांधकर कठिन अभ्यास किया। आपके चार भाई, दो पुत्र थे, क्या वे इनके फूल सरोवर में नहीं डाल सकते थे? नामदेव जी कहते हैं:

जे मृतक को चंदन चढ़ाए उसते क्या फल पाए।
जे बिष्टा में रलाई तो उसका क्या घट जाई।

अगर आप मृतक पर चंदन चढ़ा लें तो इससे उसको क्या मिलेगा? सन्त किसी के रीति–रिवाज नहीं तोड़ते लेकिन सच्चाई यह है कि 'शब्द–नाम' की कमाई करें इसी में सब कुछ आ जाता है।

एक बार संगत ने बाबा जयमल सिंह जी से पूछा कि हमारा एक प्रेमी शरीर छोड़ गया था हमने उसका कोई क्रियाक्रम नहीं किया। बाबा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जयमल सिंह जी ने कहा, ''जिस जीव को 'नामदान' मिल जाता है उस जीव का सारा क्रियाक्रम हो जाता है। वह सच्चखंड का हकदार हो जाता है लेकिन शर्त यह है कि वह कभी गुरु को इंसान न समझे। उसके दिमाग में यह बात होनी चाहिए कि गुरु इंसान नहीं; इसे इंसानी जामें में भेजा गया है।''

गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''मैं दो से एक रूप हो गया। मेरा दिल इस संसार में आने के लिए नहीं करता था लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका।'' हम कर्मों का दंड भोगने के लिए संसार में आते हैं लेकिन गुरु कर्मों से बरी होता है वह सिर्फ हमारे कर्मों के कारण ही दुखी होता है।

मैं बताया करता हूँ कि हमारे पिताजी बहुत कर्म–धर्म किया करते थे, बाद में तो महाराज सावन–कृपाल ने उन पर मौज बरता दी। पहले से उनकी यह इच्छा थी कि गया (बिहार) जाकर मेरा पिंड भर देना। उन्होंने यह भी कहा था कि वहाँ हाथ निकालकर पिंड लेते हैं। मैंने उनसे कहा कि मेरा आपसे वायदा है और मुझे पता भी चल जाएगा क्या सचमुच हाथ निकलता है? लेकिन मैं पिंड तभी भरूंगा जब हाथ निकलेगा। मैं जब वहाँ पहुँचा तो कपड़े उतारने वालों के तो मैंने अनेकों हाथ देखे लेकिन पिंड प्राप्त करने वाला कोई हाथ नहीं दिखा।

हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ, हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ।।

'नाम' ही दीपक है। सुजान पुरख परमात्मा गुरु ने जो कहा उसे संगत ने मान लिया कि हमारा गुरु क्या कह गया है? ऐसे महात्मा अंधेरे में नहीं जाते।

दीवा मेरा इक नाम दुख विच पाया तेल।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

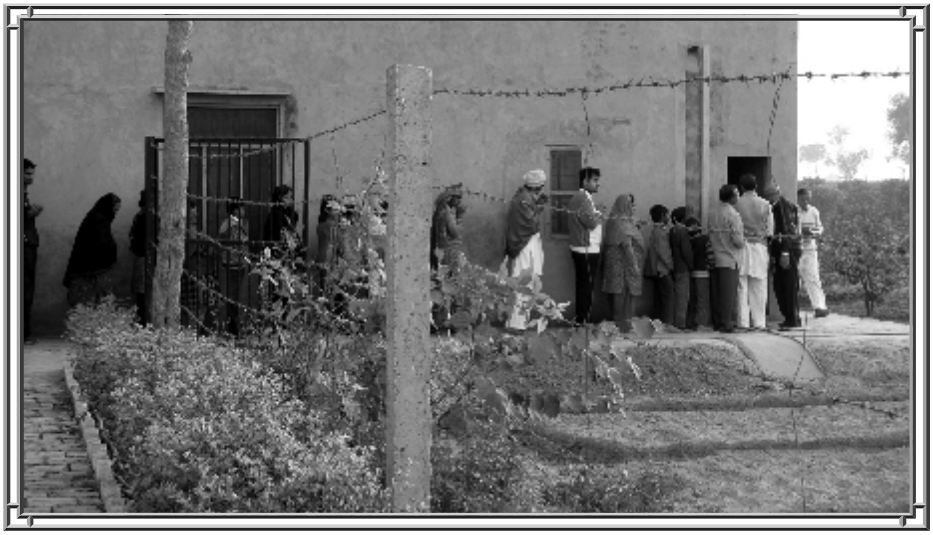

एक बार ताई जी ने हुजूर कृपाल से कहा कि आप महाराज सावन से विनती करें। महाराज कृपाल ने कहा, ''किसके आगे विनती करूं क्या महाराज सावन दूर हैं? वह कभी मुझसे दूर नहीं हुए।''

रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ।।

गुरु अमरदेव जी की दुनियावी जाति भल्ला थी। गुरु रामदास सोढ़ी थे। गुरु अमरदेव जी ने कहा, ''मैंने अब सोढ़ी को तिलक दे दिया है। मैंने धुर का परवाना निशान प्रमाण पत्र रामदास को दे दिया है अब जीवों की अगवाई इसने करनी है। यह जिन जीवों को 'नामदान' देगा उनकी संभाल होगी।''

महाराज कृपाल सदा कहते रहे, ''रूहानियत आँखों के जरिए ली और दी जाती है। दुनियावी जायदादों की वसीयत होती है लेकिन रूहानियत की कोई वसीयत नहीं होती है।'' कबीर साहब कहते हैं:

फूटी अक्ख विवेक की लिखे न सन्त असन्त।
जिसके संग दस बीस हैं तिसका नाम महन्त।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हम यह फैसला नहीं कर सकते कि यह सन्त है या असन्त है। जिसकी पार्टी है हम उसे महात्मा समझ लेते है। इसमें उनका नहीं हमारा दोष है; हमारी विवेक बुद्धि में फर्क है।

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ, गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ।।

भाई सुंदर ने गुरु अर्जुनदेव जी से कहा कि उस समय गुरु अमरदेव ने जो कहा उसे सारी संगत ने मान लिया।

मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ।।

उनका पुत्र मोहरी उठ खड़ा हुआ। गुरु अमरदेव जी ने उससे पूछा क्या चाहिए? मोहरी बोला सिक्खी दान दें। तब गुरु अमरदेव जी ने मोहरी की गर्दन पकड़कर रामदास के पैरों में झुका दी और कहा कि अब जो मिलेगा यहीं से मिलेगा।

सभ पवै पेरी सतिगुरु केरी जिथै गुरु आपु रखिआ।।

सारी संगत गुरु रामदास जी के चरणों पर माथा टेकने लगी क्योंकि गुरु ने अपना आप उनमें रख दिया।

कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरु आणि निवाइआ।।

अगर ईर्ष्या करके कोई भुलक्कड़ उस समय नहीं समझ सका समय पाकर जब उसे समझ आई तो वह भी आकर आपके चरणों में गिर पड़ा। गुरु साहब कहते हैं:

हर सेवक भये निस्तारा।

चारों युगों में निन्दा करके किसी ने परमात्मा को नहीं पाया। यह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तो सेवा का सौदा है। जहाँ गुरु ने अपना आप रखा है वहाँ आकर जो सिक्ख झाड़ू निकालने लगे सेवा करने लगे वही सिक्ख परवान होते हैं।

हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेख रजाई जीउ।।

मैं बताया करता हूँ जिसके मस्तक में धुर से लिखा आता है वही गुरु का भाणा मानता है, उसे गुरु पर ऐतबार आता है। वह 'शब्द–नाम' की कमाई करता है। यह पहले से ही तय होता है कि इसे गुरु मिलेगा, इसे गुरु पर प्रतीत आएगी और यह गुरु का **भाणा** मान सकेगा।

महाराज कृपाल कहा करते थे जो हुक्म मानते हैं वे तारीफ के काबिल हैं। आप यह भी कहा करते थे कि मेरी देह से ज्यादा मेरे वचनों की कद्र करें इससे आपको बहुत फायदा होगा।

कहे सुंदरु सुणहू संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ।।

अब भाई सुंदर गुरु अर्जुनदेव जी से कहते हैं, ''प्यारे सन्तों! जहाँ गुरु ने अपना आप रखा होता है वहाँ सारा संसार आकर माथा टेकता है क्योंकि वहाँ गुरु बैठा होता है। गुरु को मानने से उसे बड़ाई मिलती है। वह किसी भी मुल्क में जाएं गुरु ही उसकी पहचान है। दुनियां नहीं देखती कि यह हिन्दुस्तानी है! काला है! गोरा है! ज्यादा पढ़ा–लिखा या कम पढ़ा है! या यह किस जाति का है!''

इस शब्द में भाई सुंदर ने गुरु अर्जुनदेव को उस वक्त की सारी घटना बताई कि उस समय गुरु अमरदेव जी ने क्या बोला, सिक्खों ने उसे कैसे माना? जो **भाणा** मानता है वही भक्त है, वही सन्त है। जो भाणा नहीं मानता वह भक्त, सिक्ख, सन्त नहीं। इस शब्द में गुरु साहब ने हमें भाणा मानने पर जोर दिया है; हम सबको भाणा मानना चाहिए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मैं बताया करता हूँ गुरु की महक अपने आप ही लोगों के दिमाग को चढ़ जाती है। परख करने वाले सात समुंद्र पार से आकर परख लेते है कि गुरु कहाँ है? भक्ति अमोलक धन है जो हमारे साथ जाएगा यही उत्तम पदार्थ है यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है। भक्ति सच्ची इज्जत व सच्चे सुख की दाता है लेकिन इस अमोलक धन भक्ति को हम अपने आप तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक हम किसी पूर्ण महात्मा की शरण में नहीं जाते। पूर्ण महात्मा भगवान तो नहीं होते लेकिन वे भगवान में समाए होते हैं; वे भगवान के प्यारे पुत्र होते हैं। पुत्र अपने पिता से जो चाहे करवा सकता है। पूर्ण महात्मा संसार में आकर अपने ढंग का छोटा सा जीवन व्यतीत करते हैं। तुलसी साहब कहते हैं:

जे कोई कहे सन्त को चीन्हा, तुलसी हाथ कान पर दीन्हा।

मैं कानों को हाथ लगाकर कहता हूँ कि सन्त को बाहर से परखना बहुत मुश्किल है। सन्त के अंदर कमाल की नम्रता होती है।

हमें भी चाहिए कि जो कुछ गुरु अमरदेव जी ने इस शब्द में प्रेम–प्यार से बताया है हम सभी को इसे समझने की कोशिश करनी चाहिए। **भाणा** भी मानना चाहिए। हमारा जो साथी जाता है हमें उसे खुशी–खुशी विदा करना चाहिए अगर उसे सिमरन याद नहीं तो आप उसकी सुरत उस तरफ लगाएं यह सबसे बड़ा पुण्य होता है।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

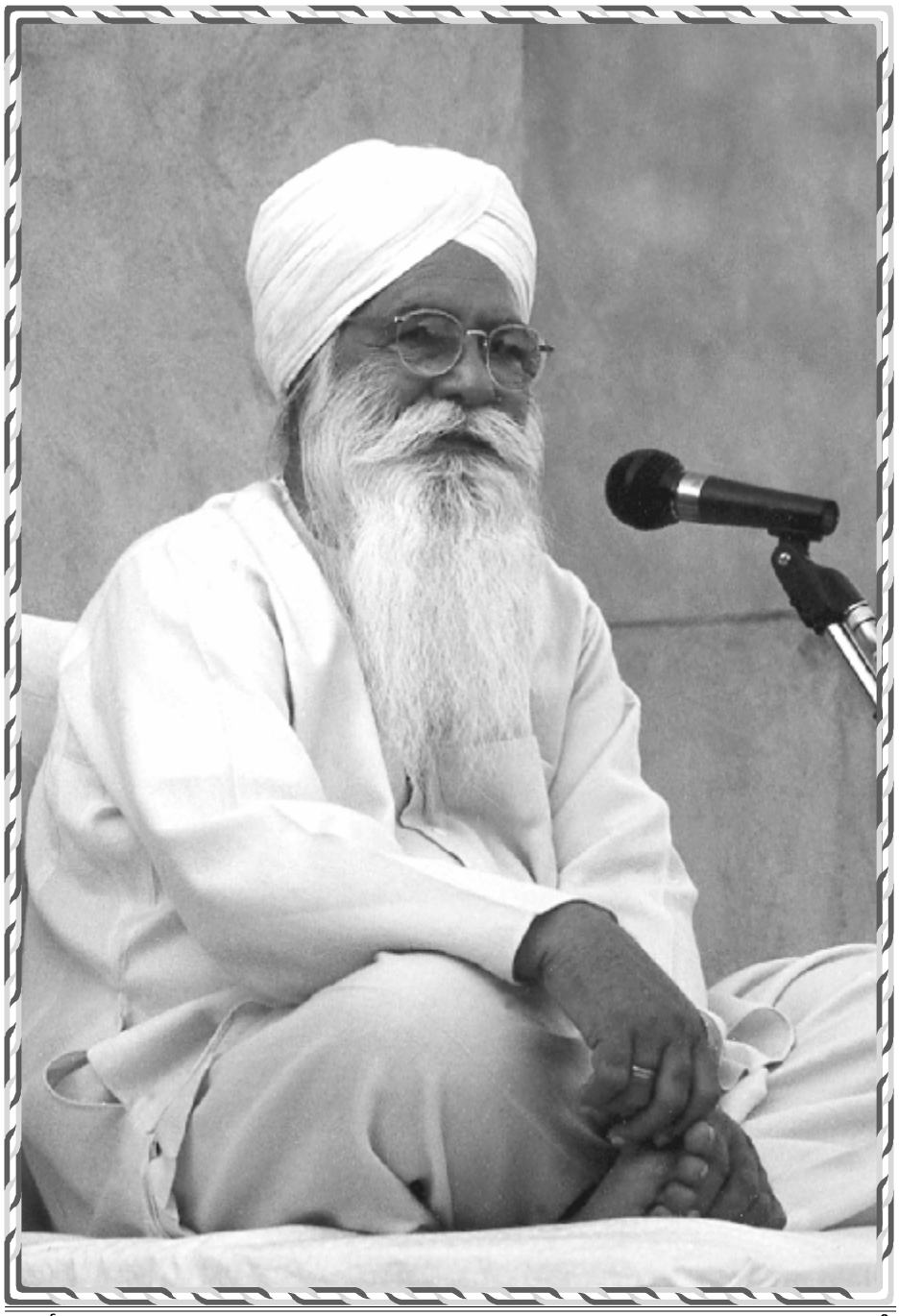

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

केवल सतगुरु ही जानते हैं

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मैं रोज भाई गुरदास जी की वारों पर सतसंग कर रहा हूँ। भाई गुरदास ने ये वारें किसी की निन्दा करने के लिए नहीं लिखी हैं। उनकी किसी के बारे में बुरी भावना भी नहीं है इसी तरह हमें भी किसी के बारे में बुरी भावना नहीं रखनी चाहिए, किसी के दोष और कमियों की तरफ नहीं देखना चाहिए क्योंकि यह काम सतगुरु का है। **केवल सतगुरु ही जानते हैं** कि उन्होंने अपने सेवक के कर्म कैसे भुगतवाने हैं क्योंकि सेवक को धुरधाम ले जाने के लिए साफ करना पड़ता है।

सन्त–महात्मा केवल समझाते ही नहीं हैं बल्कि 'नामदान' भी देते हैं। वे हमारी आत्मा को सच्चखंड से जोड़ देते हैं; यह वह जगह है जहाँ से हमारी आत्मा इस संसार में आई है। नामदान के समय गुरु हमारे अंदर 'शब्द–रूप' होकर बैठ जाते हैं। **केवल सतगुरु ही जानते हैं** कि हमारे कर्मों का भुगतान कैसे होगा? वे हमें उसी के अनुसार तजुर्बे और इच्छाएं देते हैं। केवल सतगुरु ही जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है? हमें अपने कर्मों का ज्ञान नहीं होता; हमें सुख–दुख के कारण का भी पता नहीं होता।

हमें जिस चीज़ की जरूरत होती है सतगुरु हमारे कर्मों के अनुसार वही देते हैं। हम अज्ञानी हैं जिस तरह मुँह में भोजन डालते हैं तो पता नहीं चलता कि यह शरीर के किस हिस्से में चला जाता है; इसी तरह हमें अपने कर्मों का पता कैसे चल सकता है?

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

केवल सतगुरु ही जानते हैं कि हम अपने कर्मों का भुगतान कैसे कर सकते हैं। परमात्मा हमें सुख–दुख नहीं देता। सुख–दुख हमें अपने कर्मों के मुताबिक मिलते हैं।

बाबा जयमल सिंह जी ने एक बार सावन सिंह जी से कहा, ''देखो प्यारे! परमात्मा की इच्छा हमें दुख–सुख देने की नहीं होती। परमात्मा इंसानी जामें में ही हमसे सुख–दुख भुगतवाता है। हमें दुख और सुख दूसरे लोगों की वजह से आते हैं क्योंकि हमारा उनसे पिछले कर्मों का लेना–देना होता है अगर परमात्मा हम पर दया करके हमें तीन लोकों का राज्य दे दे तब भी हममें अहंकार नहीं आना चाहिए अगर परमात्मा अपनी दया वापिस लेकर हमसे तीनों लोकों का राज्य वापिस ले ले तो हमें परेशान नहीं होना चाहिए और परमात्मा में दोष नहीं निकालना चाहिए। जब परमात्मा की मौज हुई उसने हमें यह उपहार दे दिया जब उसकी इच्छा हुई तो उसने वापिस ले लिया, यह सब कुछ उसी का था; वह सब कुछ करने में समर्थ है।'' गुरु रामदास जी कहते हैं:

जे लोक सलाहे तो तेरी उपमा जे निंदै त छोड़ि न जाई।

अगर लोग आपकी बड़ाई करते हैं कि आप बहुत अच्छे महात्मा हैं, आप बहुत अच्छा सतसंग करते हैं लोगों पर आपका बहुत प्रभाव पड़ता है; उस समय आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि यह सब आप कर रहे हैं। आपको सदा सतगुरु का यश गाना चाहिए क्योंकि हमारे अंदर कोई गुण नहीं हममें एक ही गुण है कि हम सतगुरु के हैं और सतगुरु हमारे अंदर बैठा हुआ है।

अगर लोग पापी कहकर आपकी निन्दा करते हैं कि आपमें ये बुराईयाँ हैं तो आपको गुरु में दोष नहीं ढूंढना चाहिए; सदा परमात्मा के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाणें में रहना चाहिए अगर परमात्मा की मर्जी है तो वह आपको बड़ाई देता है, जब चाहे आपकी निन्दा करवाता है। हमें सदा उसकी मौज में रहना चाहिए। परमात्मा का भाणा स्वीकार करना चाहिए।

गुरु साहब कहते हैं कि मन को काबू में करना आसान काम नहीं। मन एक बहुत बड़ी ताकत है, मन तीनों लोकों में सबसे ज्यादा ताकतवर है; तीनों लोकों में इसका हुक्म चलता है। आप जानते हैं कि जब मन ने ऋषियों–मुनियों को कुछ करने के लिए कहा तो उन्होंने भी मन के हुक्म के आगे अपना सिर झुका दिया।

प्यारेयो! सतगुरुओं ने हमें मन को वश में करने का बहुत ही अच्छा इलाज बताया है अगर हम यह इलाज करें तो मन की सारी शक्तियां– काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे वश में आ जाती है और हम उनके वश में नहीं रहते।

आपने ऋषियों–मुनियों का इतिहास पढ़ा होगा। ऋषि–मुनि बुरे लोग नहीं थे, वे भले लोग थे। उन्होंने परमात्मा की भक्ति की बहुत ही तप–अभ्यास किए। तप करने में बहुत ताकत लगती है ये बहुत कठिन होते हैं। मैंने खुद भी ऐसे कठिन अभ्यास किए हैं, मैं जानता हूँ कि भूख–प्यास को सहन करना बहुत मुश्किल होता है। ऋषियों–मुनियों ने सोचा कि हमारे जैसा कोई नहीं! उन्होंने बड़े तप–अभ्यास किए फिर भी वे काम, क्रोध के आगे हार गए।

राजा भोज की सभा में एक तृष्णालु पुरुष आया। उसने पूछा, ''वह कौन सी दलदल है, जिसमें फँसकर इंसान बाहर नहीं निकलता?'' राजा भोज संस्कृत का पंडित था। उसके दरबार में बहुत विद्वान थे। उसने सबसे पूछा लेकिन सबकी राय अलग–अलग थी। राजा भोज की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नज़र में जो सबसे ज्यादा पढ़ा–लिखा पंडित था, उसे आठ दिन की मोहलत दी गई कि अगर तूने सही जवाब नहीं दिया तो तुझे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा।

वह पंडित जंगल में चला गया। वहाँ उसे एक सतसंगी मिला। सतसंगी ने पंडित से पूछा, ''पंडित जी! आप इतने परेशान क्यों हैं?'' पंडित ने अपनी सारी व्यथा सुनाई और कहा, ''राजा ने मुझसे यह सवाल किया है कि वह कौन सी दलदल है जिसमें फँसकर इंसान बाहर नहीं निकलता?''

सतसंगी समझदार था। उसने कहा, ''मैं तेरी बात का जवाब दूँगा। मेरे पास एक पारस है, जिसमें यह गुण है अगर इसे लोहे के साथ लगा दें तो लोहा सोना बन जाता है। मैं तुझे यह पारस दे दूँगा। तुझे राजा के यहाँ नौकरी करने की कोई जरूरत नहीं है। तेरे बच्चे आराम से खाएंगे। मैंने शादी नहीं करवाई, मेरा कोई बच्चा–बाला भी नहीं अगर किसी से कोई गुण लेना हो तो उसका शिष्य बनना पड़ता है। तू मेरा शिष्य बन जा।''

पंडित बहुत खुश हुआ और सतसंगी की बात मानने के लिए तैयार हो गया। तब सतसंगी ने कहा, ''मैं तुझे अपना शिष्य तभी बनाऊँगा जब तू मेरी भेड़ का दूध पिएगा।'' पंडित ने कहा, ''मैं भेड़ का दूध कैसे पी सकता हूँ मैं तो पंडित हूँ।'' सतसंगी ने कहा, ''मैं तुझे पारस नहीं दूँगा।''

अब पंडित ने सोचा! इस पारस में बहुत गुण हैं, यह पारस सोना बनाता है। पाप हो जाएगा तो मैं प्रायश्चित कर लूँगा। पंडित ने सतसंगी से कहा, ''मैं दूध पी लेता हूँ पर तू मुझे पारस दे देना।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंगी ने कहा, ''अब वह मौका निकल गया अब तो तुझे पारस तभी मिल सकता है कि पहले दूध मैं पिऊंगा, फिर उस दूध को कुत्ता पिएगा फिर तू पीना।'' पंडित ने कहा, ''नहीं! फिर पंडित के दिल में ख्याल आया कि प्रायश्चित तो करना ही है, मैं दोनों प्रायश्चित इकट्ठे ही कर लूँगा। पंडित ने सतसंगी से कहा, ''मैं तैयार हूँ।''

सतसंगी ने कहा, ''अब वह मौका भी निकल गया अगर अब तुझे पारस लेना है तो मैं तुझे कुत्ते का जूठा दूध जिसमें मेंगने पड़ी होंगी, इंसान की खोपड़ी में डालकर दूंगा तुझे वह पीना पड़ेगा।'' पंडित ने पूछा, ''तू मुझे पारस दे देगा?'' सतसंगी ने कहा हाँ। उसने जब पंडित को खोपड़ी में दूध डालकर पीने के लिए दिया और वह पीने लगा तब सतसंगी ने कहा, ''दूध पीने से पहले मेरा जवाब सुन। यही वह दलदल है जिसमें फँसा हुआ इंसान सारी जिंदगी निकल नहीं सकता। पैसे के लोभ में इंसान हर तरह की चोरी, ठगी, बेईमानी करता है।'' पंडित खामोश हो गया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

जिसको कछु ना चाहिये, सो ही शहनशाह।

अभ्यासी के विचार निंदक के विचारों से अलग होते हैं। अहंकार ही निन्दा का कारण होता है। जब लालची का मतलब पूरा नहीं होता तो वह दूसरे आदमी से ईर्ष्या करने लगता है। अभ्यासी ने अहंकार पर विजय प्राप्त की होती है; वह अपने अंदर ईर्ष्या पनपने नहीं देता।

एक आदमी पैगम्बर मुहम्मद से द्वेष रखता था कि इनके पीछे इतने आदमी क्यों लगे हुए हैं? एक बार पैगम्बर मुहम्मद अपने एक सेवक के साथ बाजार में गए। द्वेष रखने वाले आदमी ने पैगम्बर साहब को देखते ही गालियाँ निकालनी शुरू कर दी और उनके खिलाफ

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बोलना शुरू कर दिया लेकिन पैगम्बर मुहम्मद चुप रहे। उन्होंने उसकी गालियों का कोई जवाब नहीं दिया। पैगम्बर मुहम्मद के साथ जो सेवक था वह बहुत हैरान हुआ। उसने मुहम्मद साहब से कहा, ''आप इस आदमी को जवाब क्यों नहीं देते। यह जो कुछ कह रहा है वह सच नहीं है।'' गालियां देने की और बकवास करने की भी एक हद होती है आखिर वह आदमी थककर चुप हो गया।

पैगम्बर मुहम्मद ने सेवक से कहा, ''प्यारे! अब तुम उस आदमी से जाकर पूछो कि उसे किस चीज़ की जरूरत है मैं उसकी क्या सेवा कर सकता हूँ? मुझे उसकी सेवा करके बहुत खुशी होगी?'' सेवक हैरान हुआ कि मुहम्मद साहब को इस आदमी ने बहुत गालियां दी हैं लेकिन आप उसे दंड देने की बजाय उसकी सेवा करने के लिए कह रहे हैं। उसे पता नहीं था कि मालिक के प्यारों में कितनी नम्रता होती है! शेख फरीद भी कहते हैं:

फरीदा जो तै मारन मुकीआँ, तिन्हां न मारे घुंमि।
आपनड़ै घरि जाईये पैर तिन्हा दे चुंमि।

जो आपको घूँसे मारता है आप उससे कोई बदला न लें। जो आपके घर आता है आप उसके पैरों को चूमें। अक्सर ऐसी चीज़ें पूर्ण महात्माओं के जीवन में घट जाती हैं।

महाराज सावन सिंह जी के समय में एक खास किस्म के लोगों ने आपके डेरे के सामने एक स्थान बना लिया। वे लोग आपके विरोध में जो कुछ कर सकते थे उन्होंने वह किया लेकिन महाराज सावन सिंह जी ने उनका विरोध नहीं किया। आप उन्हें लंगर में खाने के लिए बुलाते थे। आप कहते, ''यह गुरु का लंगर है यहाँ सबका स्वागत है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

केवल वही महात्मा ऐसा दिल रखते हैं जिन्होंने अभ्यास किया होता है। वे निन्दकों को भी प्यार करते हैं। हम सच्ची बात का जवाब भी निन्दा में देते हैं। कई बार हम अपने निन्दक से दस गुणा ज्यादा निन्दा करने में जोर लगा देते हैं।

चोआ चंदनु मेदु लै मेलु कपूर कथूरी संदा ।
सभ सुगंध रलाइकै गुरु गांधी अरगजा करंदा ।
मजलस आवै साहिबाँ गुण अंदरि होइ गुण महकंदा ।
गदहा देही खउलीऐ सार न जाणै नरक भवंदा ।
साधसंगति गुर सबदु सुणि भाउ भगति हिरदै न धरंदा।
अंन्हाँ अखी होंदई बोला कंनाँ सुण न सुणंदा।
बधा चटी जाइ भरंदा।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि कोई आदमी चंदन, कस्तूरी, कपूर आदि खुशबूदार चीज़ों को मिलाकर इत्र बना लेता है अगर वह इत्र लगाकर लोगों में जाता है तो उस आदमी और इत्र दोनों की प्रशंसा होती है। इसी तरह सतगुरु अपने विभिन्न सद्‌गुणों–धीरज, संतोष, विवेक को मिलाकर इत्र बनाते हैं। वे स्वयं भी सद्‌गुणों की खुशबू चारों और फैलाते हैं और उनके सेवक भी इन्हीं सद्‌गुणों के इत्र को धारण करते हैं। इस तरह जब सेवक सतगुरु की हिदायतों के अनुसार चलते हैं और उन सद्‌गुणों को धारण करते हैं तो उनकी और उनके गुरु की भी प्रशंसा होती है। लोग कहते हैं कि यह आदमी सतगुरु का सेवक है इसमे सतगुरु के सद्‌गुण हैं।

भाई गुरदास मनमुख को गधा कहते हैं। आप गधे पर इत्र डाल दें तो वह इत्र की कद्र नहीं करेगा क्योंकि गधा गंदे स्थान पर रहना पसंद

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

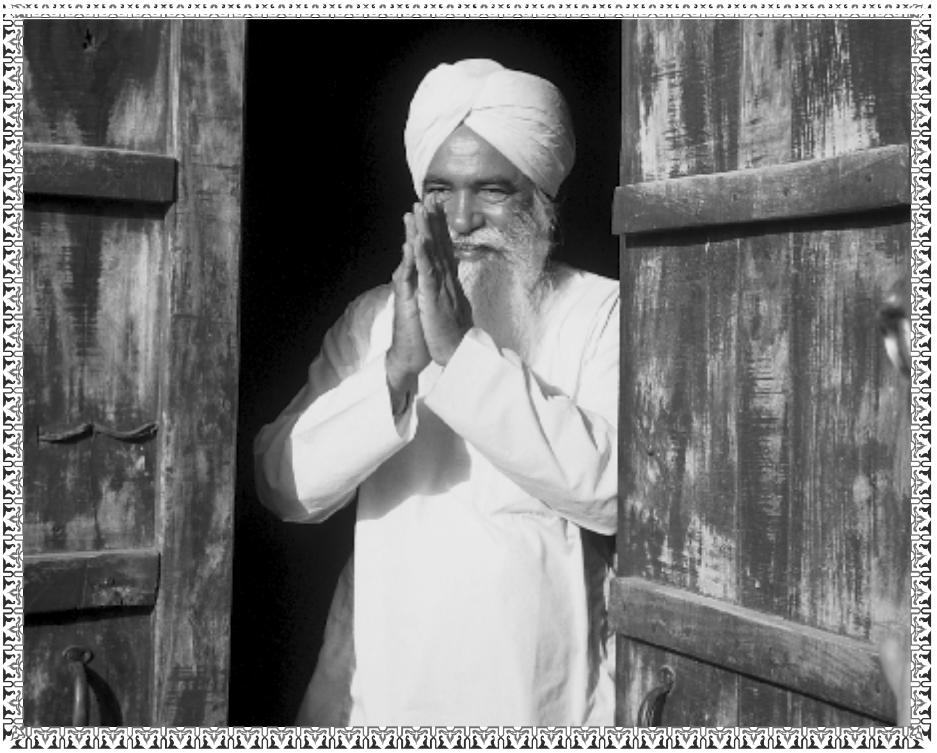

करता है। वह फिर अपने ऊपर गंदगी डाल लेता है इसी तरह मनमुख सतगुरुओं के पास आते हैं वे उनके वचनों को भी सुनते हैं लेकिन जिस तरह गधा गंदगी में खुश रहता है उसी तरह मनमुख भी सांसारिक वस्तुओं और दुनियावी गंदगी में लिपटे रहते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, '' परमात्मा ने हम पर अपार दया करके हमें सुंदर शरीर और विवेक बुद्धि दी है, जिससे हम ठीक और गलत बात का निर्णय कर सकते हैं। परमात्मा ने हमें अच्छे और बुरे भोजन का फर्क जानने के लिए विवेक बुद्धि दी है। परमात्मा ने हमें और भी बहुत सी चीज़ें दी हैं जिनका हम आनन्द उठा रहे हैं फिर भी हम परमात्मा की कद्र नहीं करते।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नानक ते नर असल खर, जो बिन गुण गरब करन्त।

वे इंसान असली गधे हैं जिनमे कोई गुण नहीं फिर भी वे अहंकार करते हैं। गधे पर चाहे जितना भी चंदन का लेप कर दें वह फिर भी गंदगी से प्यार करता है उसी तरह मनमुख को चाहे जितने भी वचन सुना दें वह सांसारिक भोगों से ही प्यार करता है।

मनमुख सतगुरु की हिदायतों को नहीं सुनते जैसे वे बहरे हैं। वे गुरु के दर्शनों का आनन्द नहीं उठाते, वहाँ दूसरी चीज़ें ढूंढ़ते हैं। वे सतसंग में आना पसंद नहीं करते। जब दूसरे लोगों का जीवन अच्छा होता देखते हैं तो अपने जीवन को अच्छा बनाने के लालच में सतसंग में आते हैं लेकिन सतगुरु की हिदायतों की कद्र नहीं करते।

धोते होवनि उजले पाट पटंबर खरै अमोले।
रंग बिरंगी रंगीअन सभे रंग सुरंगु अडोले।
साहिब लै लै पैन्हदै रूप रंग रस वसनि कोले।
सोभावंतु सुहावणै चज अचार सीगार विचोले।
काला कंबलु उजला होइ न धोतै रंगि निरोले।
साधसंगति गुर सबदु सुणि झाकै अंदरि नीरु विरोले।
कपट सनेही उजड़ खोले।।

भाई गुरदास जी हमें समझाने के लिए एक बहुत अच्छा उदाहरण देते हैं कि रेशम का कपड़ा बहुत प्यारा और नरम होता है। आप इस पर कोई भी रंग चढ़ा सकते हैं। रेशम अमीरों का कपड़ा है। जो लोग रेशम के कपड़े पहनते हैं उनकी तारीफ होती है। रेशम का कपड़ा अपनी ही नहीं पहनने वाले की शान भी बढ़ाता है। अक्सर पूजा के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

स्थान पर रेशम का कपड़ा इस्तेमाल किया जाता है। काले खुरदुरे कंबल के कपड़े को चाहे आप कितना भी धो लें वह साफ नहीं होता।

सुंदर रेशमी कपड़े का मतलब गुरमुख और काले खुरदुरे कंबल का मतलब मनमुख से है। गुरमुख पवित्र होते हैं जो लोग उनकी संगत में आते वे उन्हें भी उसी रंग में रंग लेते हैं लेकिन मनमुख का हृदय मोटे काले कंबल की तरह होता है।

दुनियावी लोग चाहे सन्तों के पास आते हैं वे फिर सांसारिक सुखों और भोगों में लगे रहते हैं। जिस तरह गाय किसी सूने घर से भोजन तलाशती हो तो उसे खाने के लिए कुछ भी नहीं मिलता इसी तरह आप चाहे कितने ही सांसारिक सुख भोगें लेकिन इनमें से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

कामवन्त कामी वह नारी, परगृह जो न चूके।
दिन परत परे परे पछतावे, लोभ सोग न सूके।

एक पल के सुख के बदले हम लाखों दिन दुख भोगते हैं। जो रोज–रोज विषय भोगते हैं उन्हें विषयों में से शान्ति नहीं मिलती वे अपने आपको दूसरों से अच्छा समझते हैं। मनमुख सतगुरु को भी ऐसा ही बनकर दिखाते हैं लेकिन उनमें दीनता नहीं होती वे दूसरों के दिल को ठेस लगाते हैं। वे सोचते हैं कि वे सबसे अच्छे हैं लेकिन वे अपने आपको और दूसरों को भी धोखा दे रहे होते हैं। वे अपने जीवन को बर्बाद कर लेते हैं और उन्हें यमदूतों के हवाले होना पड़ता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सेमल का पेड़ बहुत ऊँचा होता है लेकिन वह न फल देता है न ही छाया देता है। जब लोग सेमल पेड़ के पास छाया और फल की आशा में आते हैं तो वे निराश होते हैं। दूसरों के आगे झुकने वाला ही बड़ा है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम अपने अंदर बैठे शब्द गुरु को धोखा नहीं दे सकते। हमारे अंदर बैठा परमात्मा हमारे हर एक विचार और हरकत को देखता है वह हमारे पिछले जन्मों के बारे में भी जानता है हम उसे कैसे धोखा दे सकते हैं। हम सतगुरु का जितना काम करते हैं वह उसका भुगतान कर देता है। कभी–कभी हमारी इज्ज़त रखने के लिए दूसरों के सामने हमें मान–बड़ाई भी दे देता है। सतगुरु के अंदरूनी स्वरूप को जो दिखता है उसका पता बाहरी स्वरूप को भी होता है।'' * * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

भजन अभ्यास

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

परम पिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार हैं जिन्होंने हमें अपनी भक्ति करने का तरीका बताया और भक्ति करने का मौका भी दिया। गुरु के अपने कर्त्तव्य हैं और शिष्य के अपने कर्त्तव्य हैं। गुरु ने दया करके हमें नाम की भक्ति की दौलत दी। अब यह हम शिष्यों के ऊपर निर्भर करता है कि हम मेहनत करके नाम की उत्तम दौलत को बढ़ाँए। सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं:

उठ फरीदा सुत्तया झाड़ू दे मसीत।
तूं सुत्ता रब जागदा तेरी डाडे केही प्रीत।

ओ फरीद! उठ और अपनी मस्जिद को साफ कर। यह कैसा प्रेम है कि तू सोया है और तेरा प्यारा जाग रहा है? बुरे विचार और दुनियावी चीजें हमारे शरीर में गंद की तरह हैं। गुरु ने दया करके हमें सिमरन का झाड़ू दिया है सुबह उठकर उस झाड़ू का इस्तेमाल करें अपने अंदर से सभी विचारों और दुनियावी गंद को साफ करें।

जैसे हम मंदिर या किसी धार्मिक जगह की सफाई करते हैं वहाँ धूप जलाते हैं, परमात्मा की आराधना करते हैं उसी तरह परमात्मा हमारे अंदर है। हमें सभी दुनियावी विचार, बुरी आदतें अपने अंदर से हटानी है और सिमरन से उसकी सफाई करनी है।

आपका प्यारा आपके अंदर है, वह हमेशा जागता रहता है इसलिए आपको भी सुबह जल्दी जागना चाहिए। जब आपका प्यारा जागता है अगर आप तब नहीं जाग रहे तो इसका मतलब है कि आप उससे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उतना प्यार नहीं करते अगर आप फिर भी परमात्मा के प्यारे होने का दावा करते हैं तो वह दावा झूठा है अगर आप उससे सच्चा प्यार करते हैं तो जैसे वह जागा है आप भी जाग जाएंगें।

सभी सन्तों नें कहा है वही सच्चा मन्दिर, सच्ची मस्जिद है जहाँ परमपिता परमात्मा का निवास है; वह हमारा शरीर है। परमात्मा कहीं बाहर नहीं हमारे अंदर रहता है। पलटु साहब कहते हैं:

उलटा कूवा गगन में तिसमें जरे चिराग।
तिसमें जरे चिराग बिना रोगन बिन बाती।

आपने इस दुनियां को अँधा कुआँ बताया है। आप कहते हैं, ''हमें नहीं पता कि यह कुआँ कितना गहरा है। हम अपने प्यारे गुरु से ज्ञान का दीपक लेकर अपनी अज्ञानता के अँधेरे को मिटा सकते हैं।''

परमपिता परमात्मा हमारे मन और अहंकार की बहुत पतली सी दीवार के पीछे छिपा है लेकिन जब हम गुरु से ज्ञान का दीपक लेते हैं तो हम उस दीवार को आसानी से हटा सकते हैं। हम आसानी से देख सकते हैं कि मन और अहंकार की दीवार के पीछे वह शक्तिशाली परमात्मा हमारे अंदर रहता है।

मैंने कई बार कहा है कि मन के साथ संघर्ष करना ही **भजन–अभ्यास** है। मन बहुत जिद्दी है। मन एक कुत्ता है। मन एक चुगलखोर है। सन्तों ने मन के दोष गिनाने में ऐसे बहुत से शब्द इस्तेमाल किए हैं।

अगर किसी में बुरी आदतें हो और वह ऐसे दुश्मन का कहना माने जो जिद्दी हो, चुगलखोर हो, चोर हो, कुत्ता हो तो सोचकर देखें! वह इंसान ऐसे दुश्मन का कहना मानकर कैसे जीत सकता है?

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यह मन का काम है कि यह हमें भजन–सिमरन नहीं करने देता। मन हमें हर समय दुविधा में रखता है जब हम अभ्यास में बैठते हैं तो हजारों सालों पुरानी बातें याद करवाता है। तुलसी साहब कहते है:

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।

ओ तुलसी! इस जंग के मैदान में लड़ना पल दो पल का काम नहीं। हर रोज उठना और मन के साथ लड़ना ही अभ्यास है। इस जंग में आपके पास कोई हथियार भी नहीं है। चाहे आप **भजन–अभ्यास** के लिए यहाँ बैठें या अपने घर जाकर बैठें; भजन–अभ्यास शुरू करने से पहले पाँच पवित्र नामों को जरूर याद कर लें। आप उन शब्दों के मतलब के पीछे न जाएँ। ये नाम उन मंडलो के मालिक के हैं जिन मंडलों में से हमारी आत्मा ने गुजरना है। जब हम अंदर जाते हैं तो कोई शक नहीं रहता। हमारे लिए अंदर की राह एक खुली किताब की तरह साफ हो जाती है।

प्यारे बच्चों! आपको एक या दो घंटे जो भी समय अभ्यास के लिए मिला है उस समय मन की बात न माने। आप जब अभ्यास के लिए बैठते हैं तब अपने मन से कहें कि वह कोई रूकावट खड़ी न करे, आपको परेशान न करे। आप मन की सुने बिना अपना अभ्यास करें।

मैनें कई बार कहा है कि जैसे एक जहाज का कौआ चाहे कितनी दूर उड़कर जाए आखिर में उसे वापिस जहाज पर ही आना है इसी तरह आपके मन को वापिस आपके पास ही आना है चाहे वह कितनी ही दूर उड़कर जाए। जब आप भजन में बैठे हैं तो मन के पीछे न जाएँ। चाहे आपका मन आपको अमेरिका, इंग्लैंड या भारत में ही कहीं ले जाए, आप मन के पीछे न जाएँ। वहीं बैठें जहाँ आप हैं और अपना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अभ्यास करें। अगर आप मन के पीछे नहीं जाएँगें अपना ध्यान केन्द्रित रखेंगे तो यह अपने आप ही आपके पास वापिस आ जाएगा। थोड़े दिन प्यार और विश्वास से किया हुआ सिमरन बहुत सफल हो सकता है।

जब हम अभ्यास के लिए बैठते हैं तो क्या होता है? बहुत से प्रेमियों को अपनी मंजिल याद नहीं रहती वे अपने मन को नहीं रोकते। जब वे यहाँ बैठते हैं जैसे ही अपनी आँखे बन्द करते हैं, उनका मन उन्हें दूर ले जाता है और वे दूर चले जाते हैं। अगर वे उस समय देखें! जब वे यहाँ अभ्यास के लिए बैठते हैं तो उन्होंने कुछ ही पल अपना ध्यान एकाग्र किया होता है।

यह एक बहुत सुन्दर मौका था। परमात्मा कृपाल नें हम पर बहुत दया की, हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। यह सब उनकी ही दया थी अगर फिर वह हमें ऐसे कार्यक्रम का मौका दें, हम पर अपनी दया बरसाए, उस समय हमें पता होना चाहिए कि पिछले कार्यक्रम में हम कहाँ थे, हमने अपनी कितनी कमियों को सुधारा और हम कितने पवित्र बने। जब आप वापिस अपने घर जाएं तो जो प्रेरणा आपको यहाँ से मिली है उसे बनाए रखें।

मैं आशा करता हूँ कि आपको इन आठ दिनों के कार्यक्रम में जो प्रेरणा मिली है आप उसे याद रखेंगे। अपने घर जाकर पूरे दिल से अभ्यास करेंगे।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धन्य अजायब

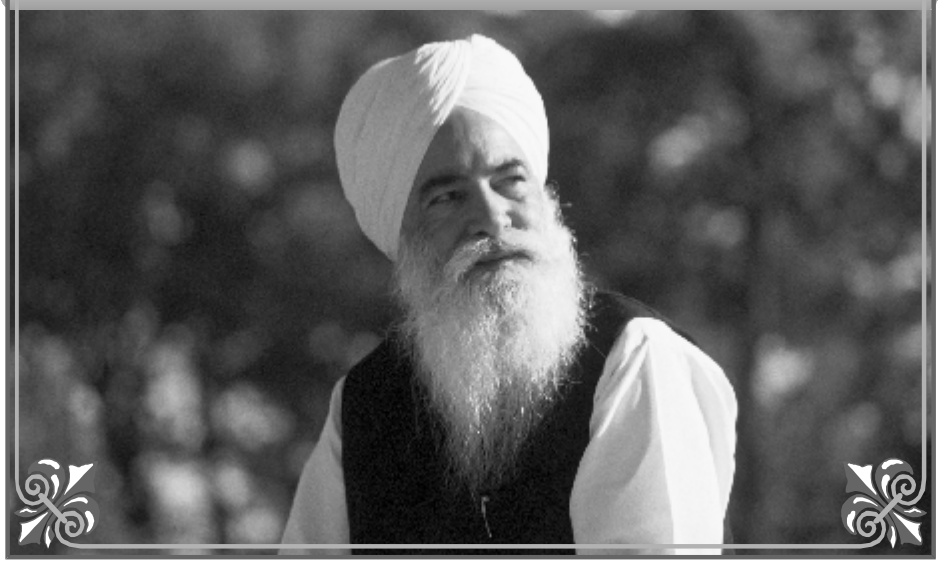

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 5, 6 व 7 अगस्त - 2011 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने,
(कांकरिया झील के पास),
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे:

शैलेष शाह - 999 89 46 231, 972 50 05 794, 942 67 26 583

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com